STEPPING STONE SCHOOL (HIGH)

CLASS: VII

Worksheet - X

Subject: Hindi **Date: 07-05-2020**

Topic: **Time Limit: 40 mins**

---

1 महामंत्र यह कभी न भूलो

हममें से अधिकांश लोग दूसरों में ही गलतियाँ ढूँढ़ते हैं जबकि दोष या कमियाँ हम सबमें हैं। यदि लोग खुद अपनी कमियों को पहचानकर उन्हें दूर करने का प्रयत्न करें तो परिवार, समाज और देश में अच्छाइयाँ दिखाई देने लगेंगी और हमें स्वयं और राष्ट्र पर गर्व होने लगेगा।

दोष पराए कभी न देखो
झाँको अपने गिरहबान में,
ऐसे करो प्रयत्न कि जिससे
आँच न आए स्वाभिमान में।

अपना ढोल स्वयं मत पीटो
कद्र करो गुण और ज्ञान की,
संकट में पहचान पड़े तो
फ़िक्र करो मत कभी जान की।

मुँह मत मोड़ो सच्चाई से
अपने पौरुष को पहचानो,
भय मत मानो कठिनाई से
करो वही जो मन में ठानो।

करो फ़ैसला अपना खुद ही
न्यायाधीश आप हैं अपने,
कदम बढ़ाओ प्रगति-पथ पर
होंगे पूरे आपके सपने।

बेचो निज ईमान नहीं, पर
अपने श्रम का मूल्य वसूलो,
शोषण सहना महापाप है
महामंत्र यह कभी न भूलो।

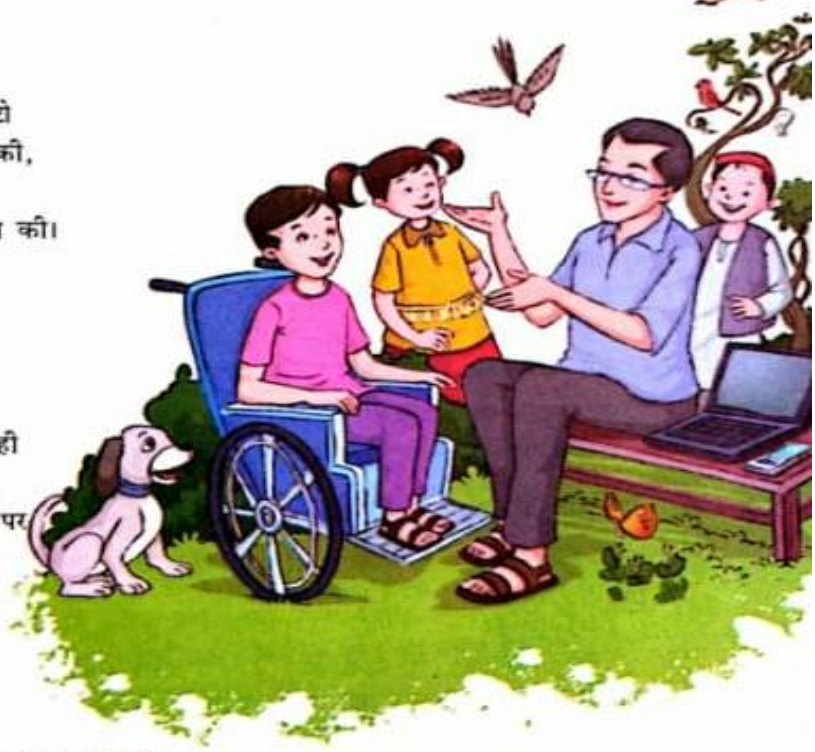

—महेशचंद्र त्रिपाठी

शब्दार्थ (Word - Meaning)

गिरहबान में झाँकना	– अपने आपको जानना	संकट	– मुसीबत	श्रम	– मेहनत
स्वाभिमान	– अपने ऊपर गर्व का भाव	पौरुष	– पुरुषत्व/साहस	निज	– अपना
न्यायाधीश	– न्याय का अधिपति (जज)	ठानो	– निश्चय करो	फ़िक्र	– चिंता
प्रगति-पथ	– उन्नति का रास्ता	कद्र	– सम्मान/परवाह	ज्ञान	– जानकारी
महामंत्र	– सबसे बड़ा मंत्र	प्रयत्न	– कोशिश, प्रयास		
शोषण	– मूल अधिकारों से वंचित रखना				

कविता

Date: 07/05/20

पाठ - 1 महामंत्र यह कभी न भूलो

'महामंत्र यह कभी न भूलो' नामक कविता तथा इसके शब्दार्थ याद कीजिए ।

कविता का संदेश :- हमलोग सदा दूसरों की ही गलतियाँ और कमियाँ देखते हैं जबकि दोष हम सब में होता है। यदि हम पहले अपनी ही कमियों और बुराइयों को समझ कर उन्हें दूर करने का प्रयास करें तो चारों तरफ सुख, शान्ति, एकता, समानता, प्रेम और भाईचारे का वातावरण छा जाएगा ।

"दोष पराए कभी न देखो .....
..... मत कभी जान की ॥"

व्याख्या :- 'श्री महेशचंद्र त्रिपाठी' द्वारा रचित कविता 'महामंत्र यह कभी न भूलो' के माध्यम से कवि हमें यह बताना चाहते हैं कि हमें दूसरों के दोषों को देखने के पहले अपने अंदर झाँक कर देखना चाहिए अर्थात् अपनी कमियों को पहचान कर उन्हें दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। हमें सदा अच्छे कर्म करने चाहिए ताकि हम स्वयं पर गर्व कर सकें ।

हमें स्वयं अपने ही मुँह से अपनी प्रशंसा न करके अच्छे कर्म करने चाहिए। हमें ऊपरी दिखावे को नहीं बल्कि सदा गुण और ज्ञान को ही महत्त्व देना चाहिए तथा अपनी जान की चिंता न करते हुए अच्छाई और सच्चाई के पथ पर आगे बढ़ते रहना चाहिए ।

—x—

कविता

पाठ -1 महामंत्र यह कभी न भूलो

* "मुँह न मोड़ो ..... जो मन में ठानो ॥"

प्रस्तुत पंक्तियों द्वारा कवि हमें आत्मविश्वास के साथ सच्चाई के पथ पर चलने की प्रेरणा दे रहे हैं।

कवि कह रहे हैं कि अपने लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में हमें कई कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु हमें उनसे ग़मगीन न होते हुए दृढ़ प्रतिज्ञा के साथ आगे बढ़ते जाना है।

* "करो फैसला अपना ..... आपके सपने ॥"

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि हमें प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। कवि कहते हैं कि हमें अपने फैसले भी खुद ही करने चाहिए। यदि हम अपने भविष्य के प्रति जागरूक होते हुए सही कार्य करें तो हमारे सपने अवश्य ही पूरे होंगे।

* "बेचो निज ईमान ..... कभी न भूलो ॥"

प्रस्तुत पंक्तियों द्वारा कवि हमें अपने अधिकारों को हासिल करने तथा अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने की प्रेरणा दे रहे हैं।

कवि कह रहे हैं कि हमें ईमानदारी के साथ कर्म करते हुए अपने अधिकारों के प्रति सजग रहना चाहिए ताकि कोई हमारा शोषण न कर सके। यदि हम भी कहीं अन्याय होते हुए देखें तो हमें उसका विरोध अवश्य करना चाहिए क्योंकि जीवन का यही महामंत्र है।